Online at: https://researchtrendsjournal.com
Indexed Journal

ISSN No: 2584-282X
Peer Reviewed Journal



INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 4; Issue 4; 2026; Page No. 57-59

Received: 08-04-2026
Accepted: 16-05-2026
Published: 08-07-2026

ग्रामोफोन युग की कोकिला लोक गायिका 'गोपी देवी'

डॉ. पंकज उप्रेती

संगीत विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रानीखेत जिला अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड, भारत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.22256464

Corresponding Author: डॉ. पंकज उप्रेती

सारांश

यह शोध–पत्र उत्तराखण्ड की समृद्ध लोकसंगीत परंपरा में महिला लोक गायिकाओं की भूमिका तथा ग्रामोफोन युग की प्रमुख लोक गायिका गोपी देवी के योगदान का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत करता है। उत्तराखण्ड के गढ़वाल, कुमाऊँ और जौनसार क्षेत्रों में लोकगीत केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रहे, बल्कि सामाजिक जीवन, लोक–स्मृति, धार्मिक आस्था, पारिवारिक अनुभव और स्थानीय संस्कृति के संरक्षण के महत्वपूर्ण साधन रहे हैं। इस परंपरा को बेड़ा, मिरासी और ढाक्की जैसे पारंपरिक लोक कलाकार समुदायों ने पीढ़ी–दर–पीढ़ी जीवित रखा। विशेष रूप से महिला लोक गायिकाओं ने लोकजीवन की संवेदनाओं, ऋतुगीतों, पारिवारिक अनुभवों और सामाजिक परिस्थितियों को अपनी स्वर–अभिव्यक्ति के माध्यम से संरक्षित किया। इसी परंपरा में गोपी देवी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। ग्रामोफोन रिकॉर्डों से प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि 1930–1940 के दशक में उन्होंने कुमाऊँनी एवं पहाड़ी लोकगीतों को यांत्रिक रिकॉर्डिंग माध्यम के द्वारा व्यापक सांस्कृतिक दस्तावेज का रूप प्रदान किया। उनके उपलब्ध रिकॉर्ड, जैसे 'कुमाऊँ की पहाड़ियां' तथा अन्य पहाड़ी प्रस्तुतियाँ, उत्तराखण्ड के प्रारंभिक रिकॉर्डेड लोकसंगीत के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण स्रोत हैं। दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र द्वारा दुर्लभ ग्रामोफोन रिकॉर्डों के संरक्षण और डिजिटलीकरण से गोपी देवी सहित अनेक अपेक्षाकृत अज्ञात लोक कलाकारों के योगदान को पुनः सामने लाने की संभावना बनी है। यह अध्ययन लोकसंगीत के इतिहास में महिला कलाकारों की उपस्थिति, ग्रामोफोन तकनीक के माध्यम से लोक परंपराओं के दस्तावेजीकरण तथा उत्तराखण्ड की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

मूलशब्द: उत्तराखण्ड का लोकसंगीत, गोपी देवी, महिला लोक गायिका, ग्रामोफोन युग, कुमाऊँनी लोकगीत, गढ़वाली लोकसंगीत, लोक संस्कृति

प्रस्तावना

हिमालयी राज्यों में जिस प्रकार के लोक स्वर गूंजते हैं उनकी तरंग लोकधारा का शास्त्र है। इसी से लगते पर्वतीय प्रदेष उत्तराखण्ड का लोकस्वर अनगिनत कलाकारों को जन्म दे चुका है। चूंकि लोक की संस्कृति में सामुहिकता है, ऐसे में इसमें रमने वाला कलाकार हो जाता है किन्तु लोक कलाकारों की श्रेणी में उन कलाकारों की गणना होती है जो अपने समय के प्रख्यात रहे हों। इन्हीं में से एक हैं– 'गोपी देवी'। जिन्हें ग्रामोफोन युग की कोकिला कह कहना समुचित होगा। उत्तराखण्ड के लोक संगीत के इतिहास में अब तक यह माना जाता रहा है कि आकाषवाणी के युग में कबूतरी देवी पहली महिला स्वरं थीं जिन्होंने पहाड़ी लोकगीतों को मंच दिया परन्तु दून लाइब्रेरी के नवीनतम प्रोजेक्ट ने इस धारणा को बदल दिया है। देहरादून स्थित ब्रिगेडियर राजेन्द्र रावत और जुगल किषोर पेटषाली के निजी संग्रह से इस पुस्तकालय को ग्रामोफोन व सामग्री मिली है उसने इसे समृद्ध कर दिया है।[1]

पहाड़ों में लोकगीत और लोकनृत्य केवल मनोरंजन के साधन नहीं, बल्कि यहां की सामाजिक–सांस्कृतिक जीवनधारा के अभिन्न अंग रहे हैं। इस समृद्ध लोक परम्परा को जीवंत बनाए रखने में महिला लोक गायिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इनमें कुछ गायिकाओं को संचार माध्यमों से पहचान मिली, जबकि अनेक गुमनाम साधकों ने बिना किसी प्रसिद्धि की आकांक्षा के अपनी गायन कला से पहाड़ के लोक को समृद्ध किया। गढ़वाल, कुमाऊं और जौनसार की लोक–संगीत परंपरा को सदियों तक बद्दी (बेड़ा), मिरासी और ढाक्की जैसे समुदायों ने आगे बढ़ाया।[2] गढ़वाल के बेड़ा समुदाय की संगीत परंपरा गंधर्वों से जुड़ी मानी जाती है और वे स्वयं को भगवान शिव का वंशज मानते हैं। इन लोक कलाकारों ने गायन, वादन और नृत्य के साथ–साथ

तत्कालीन सामाजिक घटनाओं, देवी–देवताओं की कथाओं और जनजीवन को गीतों में पिरोकर लोक–स्मृति को सुरक्षित रखा। इनके गीतों की मिठास, लय और नृत्य की भावपूर्ण अभिव्यक्ति आज भी लोगों के मन को छूती है। लोक नृत्यगीत की धारा में पर्वतीय क्षेत्रों में झोड़ा–चांचरी की धूम आज भी है। अस्कोट, गंगोली के पुनोली, पतारबाड़ा, कोठेरा ग्राम, बेरीनाग, राईआगर, सनगाढ़ में तो बकायदा मेलों पर इनकी विषेष प्रस्तुति होती है।[3] द्वाराहाट कौतिक में हुजूम उमड़ पड़ता है। इसी प्रकार अल्मोड़ा नन्दादेवी कौतिक में स्वतस्फूर्त कलाकारों का आगमन होता है।

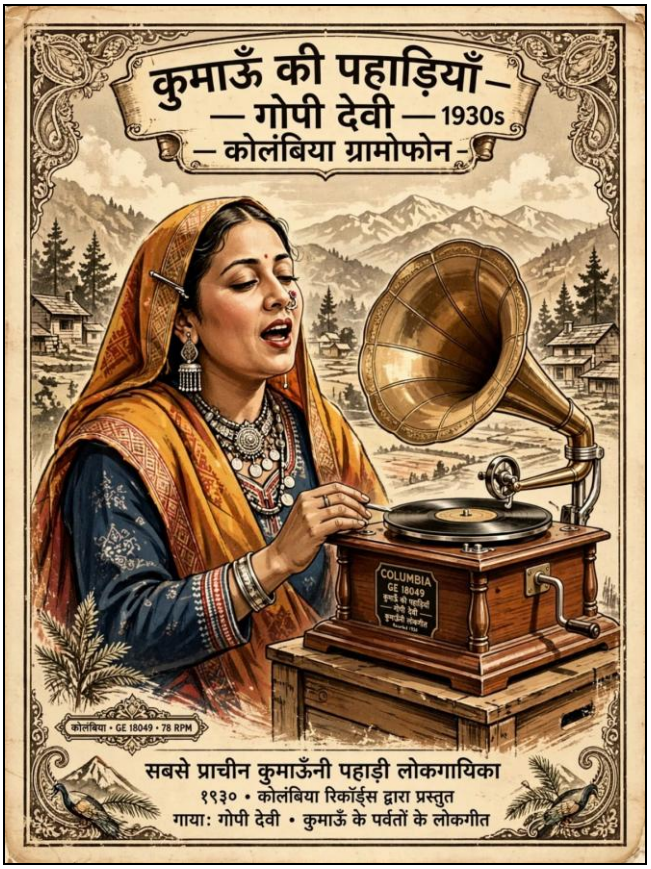

पहाड़ में महिला लोक गायन की परंपरा भी अत्यंत पुरानी और समृद्ध रही है। कुमाऊं में पिथौरागढ़ की कबूतरी देवी और गढ़वाल में गौरिकोट की सुंदरी दीदी, डांगचौरा की परतिमा देवी, दोणि की बचन देई, टेका की कौशल्या देवी, रुद्रप्रयाग की चकोरी देवी तथा धौलछीना, अल्मोड़ा की आनन्दी देवी जैसी अनेक गायिकाओं ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया।[4] इनके अतिरिक्त असंख्य ऐसी लोक गायिकाएं भी रही हैं, जिनके नाम इतिहास में दर्ज नहीं हो सके, लेकिन जिनका योगदान पहाड़ी लोक संस्कृति की निर्मिति में कम महत्वपूर्ण नहीं था। पहाड़ की पुरानी महिला लोक गायिकाओं के अनेक गीत आज भी पुराने ग्रामोफोन रिकॉर्डों और लोक–स्मृतियों में सुरक्षित हैं। कुछ लोकगीत तो सौ वर्ष से भी अधिक पुराने हैं। मास्टर शेर सिंह, इन्द्रबाई और रामप्यारी का झोड़ा "सुरमाली कौतिक लागो, मार झपैका" कभी अत्यंत लोकप्रिय था। इसी तरह गोपी देवी के "हिट वे चना मला कत्यूरा", "अल्मोड़े की मोहिनी बुलानी किलै नैं", "सोरे की पिरूली पधानी पाणी पिजा पाणी" और "गांधी रे महात्मा गांधी छुंम" जैसे गीतों ने लोकजीवन में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। चंपा देवी के "तली बै मोटर ऐगे" और "हाई वे घस्यारी मालू, धुर आये घास काटना" जैसे गीत भी उस दौर की सामाजिक परिस्थितियों और लोकभाषा की जीवंत अभिव्यक्ति हैं।[5]

इन पुरानी गायिकाओं की खनकदार आवाज, विशिष्ट गायन शैली और सहज भावाभिव्यक्ति ने पहाड़ी लोक विरासत को पीढ़ी–दर–पीढ़ी पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने लोकगीतों को केवल गाया नहीं, बल्कि उन्हें अपने समय के सामाजिक अनुभवों से जोड़ा और लोक–संस्कृति की निरंतरता बनाए रखी। अनेक महिला लोक गायिकाएं इस परंपरा को आगे बढ़ा रही हैं। उत्तराखंड दूरदर्शन और आकाशवाणी केंद्रों ने हाल के वर्षों में उभरती लोक गायिकाओं को मंच देकर उन्हें नई पहचान दिलाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। पुरानी महिला लोक गायिकाओं, उनके गीतों और उपलब्ध ग्रामोफोन रिकॉर्डों का व्यवस्थित संरक्षण, डिजिटलीकरण और दस्तावेजीकरण करने की दिषा में दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र ने पहल की है।[6] इन गीतों की रिकाडिंग संभवतः 1930 के दशक के उत्तरार्ध अथवा 1940 के दशक के प्रारम्भ में मानी गई है। इससे पूर्व दो साल पहले दून पुस्तकालय द्वारा अपने लोक संग्रहालय में रखे कुछ अन्य दुर्लभ गीतों को भी ग्रामोफोन से लेकर डिजिटल किया गया है। यह गीत अब डिजिटल स्वरूप में संरक्षित हो गये हैं। इन रिकॉर्ड्स में मास्टर शेर सिंह, गोपी देवी, चंदा बाई, इंदिरा बाई, राम देई तथा अन्य लोक कलाकारों की दुर्लभ प्रस्तुतियाँ दर्ज हैं। डिजिटलीकरण के बाद दून पुस्तकालय के पास पहाड़ी लोकसंगीत के कुछ दुर्लभ ग्रामोफोन रिकॉर्ड्स का डिजिटल संग्रह उपलब्ध हो गया है। संस्थान द्वारा 1930 से 1970 के बीच गढ़वाल, कुमाऊँ और जौनसार क्षेत्र में जारी लगभग 15 संभावित ग्रामोफोन रिकॉर्ड्स की एक प्रारंभिक सूची भी तैयार की जा रही है, जो इस विषय पर आगे के शोध का आधार बन सकती है।[7] ग्रामोफोन रिकॉर्ड्स के दुर्लभ गीतों के डिजिटल व संरक्षण कार्य की पहल से कई नई ऐतिहासिक जानकारियाँ सामने आ सकती हैं। भीमताल की चंदा बाई तथा राम देई जैसे अपेक्षाकृत अज्ञात लोक कलाकारों के अस्तित्व का भी प्रमाण इन रिकॉर्ड्स से प्राप्त हुआ है। साथ ही यह जानकारी भी सामने आई कि एयरो–फोन कंपनी द्वारा कुछ रिकॉर्ड्स का निर्माण उज्जैन और दिल्ली में भी किया गया था।

जब हम ग्रामोफोन युग की कोकिला की जानकारी जुटाते हैं तो पता चलता है कि गोपी देवी का काल 1930–1940 के बीच का है। यह आजादी से 15 साल पहले का समय है। इस काल में महिला गायिकाओं का ग्रामोफोन पर गाना एक क्रान्तिकारी कदम था। इससे पहले गौर जान (1902) जैसी कुछ ही महिलाओं ने यह साहस किया था। गोपी देवी ने पहाड़ की महिलाओं की वेदना, ऋतु गीत और पारिवारिक लोकगीतों को पहली बार यान्त्रिक माध्यम से दर्ज किया। गोपी देवी के जिन रिकॉर्ड्स का उल्लेख विवरण मिलता है उनमें हैं–

GE. 18049 कोलंबिया, 10" गोपी देवी पहाड़ी (कुमाऊं की पहाड़ियां)
GE. 5337 कोलंबिया, गोपी देवी, हिन्दुस्तानी
GE. 5349 कोलंबिया, गोपी देवी, पहाड़ी

जीई सीरीज कोलंबिया रिकॉर्ड कम्पनी की 1930 के दषक की इलेक्ट्रिकल रिकॉर्डिंग सीरीज थी। इस इंच का आगार इंगित करता है कि यह 78 आरपीएम का मानक रिकॉर्ड था। 'कुमाऊं की पहाड़ियां' शीर्षक से स्पष्ट है कि यह विशुद्ध कुमाउंनी लोकगीत था। शोध का यह सिलसिलता अनवरत चलता रहेगा जिसमें आगे भी खोजा जाना जरूरी है क्योंकि गोपी देवी के बारे में ही बहुत कुछ नहीं मिल पा रहा है। पुराने दौर में जब मिरासी परिवारों ने लोकगीतों की परम्परा को सींचा, तक इनके ग्राम, परिवार इत्यादि के बारे में उल्लेख नहीं मिल पाता है। अनुमान

लगाते हुए इनका जन्म समय तय किया जाता रहा है। इसके बाद के दौर में जागरूकता देखी गई है लेकिन पुरानी सुघड़ परम्परा इतिहास बनकर रह गई है। गोपी देवी से कलाकार फिर से नहीं मिल सकते।

सन्दर्भ

1. दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र की पहल पर कुमाउनी लोक गीतों के 5 दुर्लभ ग्रामाफोन के रिकार्ड्स को 6 अगस्त 2026 को डिजिटल किया गया है।
2. नैनीताल समाचार 8 अगस्त 2026
3. पिघलता हिमालय यूट्यूब चैनल में झोड़ा–चांचरी धुमाली–चाली https://youtu.be/Gw00a6nJz8U?si=TlcvtreHXYwJ4MmX
4. पिघलता हिमालय यूट्यूब चैनल में सन्तराम–आनन्दी की बातचीज https://youtu.be/WfCDZljuMUE?si=l1j-n90f-_BM6-P23
5. खोजी, शोधार्थी, सामाजिक सरोकारों से जुड़े युवा हल्द्वानी निवासी श्री हिमांषु पाठक 'रिस्की' इस समृद्ध परम्परा के कई पुराने रिकार्डों की खोज कर चुके हैं और उन्हें सोषल मीडिया द्वारा जनमानस के बीच लाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।
6. लोकसंगीत की दुर्लभ धरोहर का डिजिटलीकरण की दिशा में 6 अगस्त 2026 को एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए कुमाऊँनी भाषा के पांच दुर्लभ ग्रामोफोन रिकॉर्ड्स का सफलतापूर्वक डिजिटलीकरण किया। ये रिकॉर्ड्स ब्रिगेडियर राजेंद्र रावत के निजी संग्रह से वरिष्ठ पत्रकार व ऐतिहासिक संदर्भों के जानकार राजू गुसांईं द्वारा प्राप्त किये गये।
7. दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र देहरादून में शोध अधिकारी श्री चन्द्रषेखर तिवारी से हुई बातचीत में उन्होने जानकारी दी। 16.8.2026

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.